दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए।
ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर।। ४८ ।।

इस तरह से कुरान में दसवीं सदी का बयान दो बुर्जों का बयान किया है। वह बारहवीं सदी सम्वत् १८४५ में पूरी हो गई। उसके बाद देवी-देवताओं को, अजाजील को वाणी की पहचान होगी। तब सब दुनियां अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक।। १ ।।

इस तरह से कुरान के पहले सिपारे में जो कयामत की गिनती लिखी है, उसे मोमिनों ने अच्छी तरह समझा। दुनियां वाले जिन्हें दोजख की अग्नि में जलना है, वह इसको नहीं समझ सकते और न कभी उनके संशय ही मिट सकते हैं।

पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे।। २ ।।

यह तो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कयामत के दिन का पता लगता है। वैसे कयामत कब होगी, इस बात को दुनियां वाले नहीं समझ पाते। कुरान के तीसवें आम सिपारे में श्री राजजी महाराज के पांच स्वरूपों का मिलना इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर इकट्ठा होना लिखा है। बृज, रास, अरब रसूल साहब, नौतनपुरी, श्री श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज। इसको मोमिन ही समझ सकते हैं, जिनके दिल निर्मल हैं।

ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे।। ३ ।।

जो इन पांचों के बताए, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के बताए निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर रहनी से ईमानदारी से चलेंगे, वही ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड धामों की रहने वाली हैं। दुनियां वाले झूठे काम और बदचलनी से जीवन व्यतीत करते हैं। वह दोजख (पश्चाताप) की अग्नि में जलेंगे।

हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर।
ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर।। ४ ।।

सदा कुकर्म करने वाले जीवसृष्टि ही दोजखी हैं जो कयामत के दिन शर्मसार होंगे। कयामत के दिन को आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। अब श्री प्राणनाथजी महाराज कयामत की जानकारी दे रहे हैं। इनके स्वरूप को पहचानो।

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर।। ५ ।।

परमधाम कब जाना होगा, किस रास्ते से जाना होगा, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। कुरान हदीसों में लिखा है कि कयामत के दिन सबको अपने कर्मों का फल मिलेगा और तब श्री प्राणनाथजी महाराज अपने कर कमलों द्वारा सबको सीधे रास्ते पर चलाएंगे।

Nijanand App

तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में पहुंचने पर पता चलेगा कि कयामत के दिन की पहचान तुम्हें किसने कराई? कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करने की शोभा खेल में तुमको इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने दी है, जिसकी खबर आज तक किसी को नहीं थी। इस बात की पहचान न्याय करने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज करा रहे हैं।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए।
कूवत तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए।। ७ ।।

न्याय के दिन कोई भी किसी को लाभ नहीं दे सकेगा और न ही दु:ख-सुख में मददगार बन सकेगा। तब किसी की भी इलम, चतुराई नहीं चलेगी। कर्मों के हिसाब से ही सबको न्याय मिलेगा।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएं।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो कुरान में फरमाया था, उसके रहस्यों को श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से खोल दिया है। उससे पारब्रह्म अक्षरातीत धाम धनी तथा मोमिनों की पहचान हो गई है। ऐसे ही यकीन वाले मोमिनों को ही प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ में शामिल कर रहे हैं।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई।। ९ ।।

जब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए, तब मोमिन का हज (तीर्थ स्थान) परमधाम है और रोजा दुनियां को छोड़कर अपने श्री राजजी के चरणों में समर्पित करना है, जाहिर हो गया। तब श्री प्राणनाथजी ने यह सभी बातें छत्रसालजी महाराज को समझाईं और परमधाम के बारह हजार मोमिनों का सिरदार ''अमीरुल मोमिन'' बनाया।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध।। १ ।।

नवीं सदी के आगे दसवीं सदी खुशी का दिन कहा है (ईसा रूह अल्लाह का आना कहा है)। दसवीं सदी के आगे ग्यारहवीं सदी में सब लीला हुई। ग्यारहवीं सदी के अन्दर तारतम ज्ञान आया। कुलजम सरूप की वाणी उतरी। मोमिनों की जागनी शुरू हुई। श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहेंदी साहेब जाहिर हुए। यह बात कुरान में कई तरह से लिखी है।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार।। २ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्दर ही जागनी के काम का विस्तार हुआ। सभी सिरदार (प्रधान) शाकुण्डल, शाकुमार, ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि संसार में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ही कुलजम सरूप की वाणी और परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी महाराज ने दीं।

Nijanand App